सत्यमेव जयते

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Textiles, Govt. of India

हथकरघा पुरस्कार

HANDLOOM AWARDS 2023

O/o DEVELOPMENT COMMISSIONER (HANDLOOMS)
Ministry of Textiles, Govt. of India

www.handlooms.nic.in

वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार

Ministry of Textiles, Govt. of India

सिद्धहस्त बुनकरों को

संत कबीर हथकरघा पुरस्कार, राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार

एवं

कमलादेवी चट्टोपाध्याय हथकरघा पुरस्कार

तथा

हथकरघा उत्पादो के डिज़ाइन विकास एवं विपणन हेतु

राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार

वर्ष 2023

SANT KABIR HANDLOOM AWARDS, NATIONAL HANDLOOM AWARDS

&

KAMALADEVI CHATTOPADHYAY HANDLOOM AWARDS

for Accomplished Handloom Weavers &

NATIONAL HANDLOOM AWARDS

for Design Development & Marketing of Handloom Products

for the Year 2023

O/o DEVELOPMENT COMMISSIONER (HANDLOOMS)

Ministry of Textiles, Govt. of India

www.handlooms.nic.in

कमलादेवी चट्टोपाध्याय

‘‘किसी भी देश की महत्ता और उपलब्धियों का मूल्यांकन उसके प्राचीन इतिहास के साथ–साथ उसकी वर्तमान समृद्धि एवं उन्नति के साथ होता है। प्रत्येक देश के स्वर्णिम काल में उसकी दीर्घ एवं सुदृढ़ परम्पराएँ निहित होती हैं भले ही वे वर्तमान युग में धूमिल अथवा धुंधली–सी नजर आती हो।‘‘

कमलादेवी चट्टोपाध्याय

"The glory and achievements of a country are valued as much in its ancient past as in its present well-being and progress. Every land has its long and deep-rooted tradition garnered in its glittering epochs, however primitive or faded the current facade may seem."

KAMALADEVI CHATTOPADHYAY

विषय-सुची

संत कबीर हथकरघा पुरस्कार 2023					
क्र.सं.	पुरस्कार प्राप्तकर्ता का नाम	राज्य	श्रेणी	हथकरघा उत्पाद का नाम	पृष्ठ संख्या
1.	श्री खरेट देवजी भीमजी	गुजरात	बुनाई	भुजोड़ी साड़ी	18
2.	श्री राम कृष्ण मेहेर	ओडिशा	बुनाई	राष्ट्रीय एकता साड़ी (विविधता में एकता)	20
3.	श्री हरिलाल मेहेर	ओडिशा	बुनाई	साचीपार दसफुलिया खादी साड़ी	22
4.	श्री मगनभाई दानाभाई वणकर	गुजरात	बुनाई	कच्छ की कलात्मक टांगलिया सूती रेशमी साड़ी	24
कमलादेवी चट्टोपाध्याय संत कबीर हथकरघा पुरस्कार 2023					
1.	श्रीमती वाहेंबम शाया देवी	मणिपुर	महिला	सारोंग फी	28
राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार 2023					
1.	श्री एम. बालासुब्रमण्यम	तमिलनाडु	बुनाई	कांचीपुरम सिल्क साड़ी	32
2.	श्री जी. बालाकृष्णन	तमिलनाडु	बुनाई	डिंडीगुल सूती साड़ी	34
3.	श्री मुकेश कर्नाटी	तेलंगाना	बुनाई	100 रूपांकनों की प्राकृतिक रंगाई वाली डबल इकत साड़ी	36
4.	श्री रसानंद मेहेर	ओडिशा	बुनाई	ओडिशा की जीआई विरासत साड़ी	38
5.	श्री खैरुद्दीन शेख	पश्चिम बंगाल	बुनाई	खादी सूती जामदानी साड़ी	40
6.	श्री उत्तम कुमार मेहेर	ओडिशा	बुनाई	सप्त चक्र साड़ी	42
7.	श्री फरीद अहमद गनाई	जम्मू–कश्मीर	बुनाई	कानी पालदार शॉल	44
8.	श्रीमती मेघाली दास	असम	बुनाई	मूगा सिल्क मेखला चादर	46
9.	श्री जेठा राम	राजस्थान	युवा बुनकर	पट्टू साड़ी	48
10.	श्रीमती नबम यापी	अरुणाचल प्रदेश	लुप्तप्राय बुनाई	डंपिंग गाले सेट	50
11.	सुश्री निर्मला सिन्हा	त्रिपुरा	दिव्यांग बुनकर	इनाफी	52
12.	सुश्री वनलालरुआती	मिजोरम	जनजातीय बुनाई	जनजातीय रूपांकनयुक्त मेज़पोश	54
कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार 2023					
1.	श्रीमती लीला वन्ती	हिमाचल प्रदेश	महिला	कुल्लू शॉल	58
2.	श्रीमती वेकुवोलू डोज़ो	नागालैंड	महिला	समसामयिक नागा थ्रो	60

डिज़ाइन विकास हेतु वर्ष 2023 का राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार				
क्र.सं.	पुरस्कार प्राप्तकर्ता का नाम	राज्य	श्रेणी	पृष्ठ संख्या
1.	श्री सौमित्र मंडल	पश्चिम बंगाल	व्यक्तिगत डिज़ाइनर	64
2.	श्री श्याम सुंदर मेहेर	ओडिशा	व्यक्तिगत डिज़ाइनर	66
हथकरघा उत्पादों के विपणन हेतु वर्ष 2023 का राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार				
1.	अंगिका हथकरघा विकास उद्योग सहकारी समिति लिमिटेड	उत्तर प्रदेश	प्राइमरी सहकारी समिति	70

Contents

S.No.	Name of the Awardee	State	Category	Name of the Handloom Product	Page No.
Sant Kabir Handloom Awards 2023					
1.	Shri Kharet Devji Bhimji	Gujarat	Weaving	Bhujodi Saree	18
2.	Shri Ram Krishna Meher	Odisha	Weaving	Rastriya Ekta Saree (Unity in Diversity)	20
3.	Shri Harilal Meher	Odisha	Weaving	Sachiper Dasphulia Khadi Saree	22
4.	Shri Maganbhai Danabhai Vankar	Gujarat	Weaving	Artistic Kutchi Tangaliya Cotton Silk Saree	24
Kamaladevi Chattopadhyay Sant Kabir Handloom Awards 2023					
1.	Smt. Wahengbam Shaya Devi	Manipur	Women	Sarong Phee	28
National Handloom Awards 2023					
1.	Shri M. Balasubramanian	Tamil Nadu	Weaving	Kancheepuram Silk Saree	32
2.	Shri G. Balakrishnan	Tamil Nadu	Weaving	Dindigul Cotton Saree	34
3.	Shri Mukesh Karnati	Telangana	Weaving	Natural Dyed Double Ikat Saree with 100 Motifs	36
4.	Shri Rasananda Meher	Odisha	Weaving	GI Heritage of Odisha Saree	38
5.	Shri Khayeruddin Sekh	West Bengal	Weaving	Khadi Cotton Jamdani Saree	40
6.	Shri Uttam Kumar Meher	Odisha	Weaving	Sapta Chakra Saree	42
7.	Shri Fareed Ahmed Ganie	Jammu & Kashmir	Weaving	Kani Paldar Shawl	44
8.	Smt. Meghali Das	Assam	Weaving	Muga Silk Mekhela Chadar	46
9.	Shri Jetha Ram	Rajasthan	Young Weaver	Pattu Saree	48
10.	Smt. Nabam Yapi	Arunachal Pradesh	Languishing Weaves	Dumping Gale Set	50
11.	Miss. Nirmala Sinha	Tripura	Divyang Weaver	Enaphi	52
12.	Miss. Vanlalruati	Mizoram	Tribal Weave	Tribal Design Table Cloth	54
Kamaladevi Chattopadhyay National Handloom Awards 2023					
1.	Smt. Leela Vanti	Himachal Pradesh	Women	Kullu Shawl	58
2.	Smt. Vekuvolu Dozo	Nagaland	Women	Diversified Naga Throw	60

S.No.	Name of the Awardee	State	Category	Page No.
National Handloom Awards for Design Development for the year 2023				
1.	Shri Soumitra Mondal	West Bengal	Individual Designer	64
2.	Shri Shyam Sundar Meher	Odisha	Individual Designer	66
National Handloom Awards for Marketing of Handloom Products for the year 2023				
1.	Angika Hathkargha Vikas Udyog Sahkari Samiti Ltd.	Uttar Pradesh	Primary Cooperative Society	70

प्रस्तावना

सिद्धहस्त बुनकरों के लिए संत कबीर हथकरघा पुरस्कार

संत कबीर हथकरघा पुरस्कार ऐसे उत्कृष्ट हथकरघा बुनकरों को प्रदान किया जाता है, जो इस परम्परा को साथ लेकर चल रहे हैं और जिन्होंने इस क्षेत्र के विकास में अमूल्य योगदान दिया है। इसे भारत के 15वीं शताब्दी के एक फकीर कवि और संत, कबीर की स्मृति में विकास आयुक्त हथकरघा कार्यालय, वस्त्र मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा शुरू किया गया है। संत कबीर पुरस्कार 2009 से प्रदान किया जा रहा है। वर्तमान मे उत्कृष्ट हथकरघा बुनकरों को अधिकतम 6 पुरस्कार दिए जा रहे हैं, जिनमें 1 महिला (कमलादेवी चट्टोपाध्याय) के लिए, 1 लुप्तप्राय बुनाई के लिए और 1 जनजातीय बुनाई के लिए दिये जा रहे हैं।

पुरस्कार और वित्तीय सहायताः इस पुरस्कार में ₹ 3,50,000 का नकद पुरस्कार, एक सोने का सिक्का, एक ताम्रपत्र, एक शॉल तथा एक प्रमाण पत्र शामिल हैं।

पात्रताः कोई भी ऐसे हथकरघा बुनकर, जिसने राष्ट्रीय या राज्य पुरस्कार, राष्ट्रीय उत्कृष्टता प्रमाणपत्र प्राप्त किया हो अथवा असाधरण कौशल वाले ऐसे हथकरघा बुनकर, जिन्होंने बुनाई परम्परा के संवर्धन, विकास और संरक्षण तथा बुनकर समुदाय के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया हो, उन्हे संत कबीर पुरस्कार देने पर विचार किया जाता है। आवेदन के लिए पिछले वर्ष के 31 दिसंबर को कम से कम 50 वर्ष की आयु और 20 वर्ष का अनुभव होना चाहिए।

चयन प्रक्रियाः विजेता का चयन करने के लिए चयन की प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं। पहले चरण में संबंधित क्षेत्र (उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वी) के बुनकर सेवा केन्द्रों के क्षेत्रीय निदेशक की अध्यक्षता में क्षेत्र स्तरीय चयन समिति द्वारा चयन किया जाता है। अलग–अलग क्षेत्रो से चुनी गई सभी प्रविष्टियों को विकास आयुक्त (हथकरघा) की अध्यक्षता में मुख्यालय स्तरीय चयन समिति के समक्ष रखा जाता है। अंततः विजेता प्रविष्टियों का चयन सचिव (वस्त्र) की अध्यक्षता में केन्द्र स्तरीय चयन समिति द्वारा किया जाता है। सभी त्रि–स्तरीय समितियों में सदस्य के रूप में गैर–सरकारी विशेषज्ञ भी होते हैं।

वर्ष 2009 से लेकर अब तक 72 हथकरघा बुनकरों को संत कबीर पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं।

क्र. सं	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या
1.	आन्ध्र प्रदेश	7
2.	गुजरात	16
3.	हरियाणा	1
4.	हिमाचल प्रदेश	1
5.	जम्मू एण्ड कश्मीर	1
6.	केरल	1
7.	महाराष्ट्र	2
8.	मणिपुर	2
9.	नागालैंड	1
10.	ओडिशा	21
11.	राजस्थान	3
12.	तमिलनाडु	2
13.	तेलंगाना	2
14.	त्रिपुरा	1
15.	उत्तर प्रदेश	5
16.	पश्चिम बंगाल	6
	सम्पूर्ण योग	72

PREFACE

SANT KABIR HANDLOOM AWARDS FOR EXPERT WEAVERS

Sant Kabir Handloom Award is conferred to outstanding handloom weavers who are carrying on with the tradition and have made valuable contribution to the development of the sector. It was established by office of the Development Commissioner for Handlooms, Ministry of Textiles, Government of India in the memory of Saint Kabir, a 15th century mystic poet and Saint of India. Sant Kabir Award is conferred since 2009. Presently a maximum of 6 Awards are being given including 1 each for woman (Kamladevi Chattopadhyay), 1 for Languishing weaves and 1 for Tribal weaves to the outstanding handloom weavers.

Award and Financial Assistance: This award consists of Cash prize of ₹ 3,50,000/-, one mounted gold coin, one tamrapatra, one shawl and a certificate.

Eligibility: Any handloom weaver, who is a recipient of National or State Award, National Merit Certificate or a handloom weaver of extraordinary skills who has contributed significantly to the promotion, development and preservation of weaving tradition and welfare of the weaving community, is considered for the Sant Kabir Award. Applicant should not be below the age of 50 years and should have 20 years of experience as on 31st December of the previous year.

Selection Process: Three tier selection process is followed to finalize the winning entry. In the first tier, selection is done by the Zonal Level Selection Committee headed by the Zonal Director of WSCs of respective Zone i.e. (North, South, West & East). All the selected entries from the respective Zones are placed before Headquarter Level Selection Committee chaired by the Development Commissioner (Handlooms) for selection. The final winning entries are selected by the Central Level Selection Committee chaired by the Secretary (Textiles). All three level committees also have non-official experts as members.

Since 2009, 72 handloom weavers have been conferred Sant Kabir Awards. State wise list is as under:

S. No.	State/UT	Total No. of Awardees
1	Andhra pradesh	7
2	Gujarat	16
3	Haryana	1
4	Himachal Pradesh	1
5	Jammu & Kashmir	1
6	Kerala	1
7	Maharashtra	2
8	Manipur	2
9	Nagaland	1
10	Odisha	21
11	Rajasthan	3
12	Tamilnadu	2
13	Telangana	2
14	Tripura	1
15	Uttar Pradesh	5
16	West Bengal	6
	Total	72

सिद्धहस्त बुनकरों के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार

राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार हथकरघा बुनकरों को उनके उत्कृष्ट कारीगरी में उनके योगदान के विकास के लिए मान्यता स्वरूप प्रदान किए जाते हैं। यह पुरस्कार वर्ष 1965 में शुरू किया गया था और वर्तमान में अधिकतम 14 पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं जिनमें 2 महिला (कमलादेवी चट्टोपाध्याय) के लिए, 1 युवा बुनकर, 1 विकलांग बुनकर, 1 लुप्तप्राय बुनकरों के लिए और 1 जनजातीय बुनकरों के लिए उत्कृष्ट हथकरघा बुनकरों के लिए दिया जाता है। इस मान्यता से उन्हें और अधिक उत्साही और उत्पादनकारी ढंग से बुनाई कौशल को जारी रखने के लिए प्रोत्साहन मिलेगा।

पुरस्कार और वित्तीय सहायताः पुरस्कार में ₹ 2,00,000 का नकद पुरस्कार, एक ताम्र पत्र, एक शॉल तथा एक प्रमाण पत्र शामिल है।

पात्राताः ऐसे असाधरण कौशल वाले बुनकर, जिन्होंने हथकरघा उत्पाद के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और उत्पाद का विविधीकरण करके, डिज़ाइन में नयापन लाकर लुप्तप्रायः बुनाई उत्पाद को पुनर्जीवित करने में उल्लेखनीय प्रयास किए हैं, उन्हें राष्ट्रीय पुरस्कार देने पर विचार किया जाता है। आवेदनकर्ता की आयु पिछले वर्ष के 31 दिसम्बर को 30 वर्ष से कम न हो (युवा बुनकर के अतिरिक्त) तथा हथकरघा बुनाई के क्षेत्र में 10 वर्षों का अनुभव होना चाहिए।

चयन प्रक्रियाः विजेता का चयन करने के लिए चयन की प्रक्रिया में तीन चरण होते हैं। पहले चरण में संबंधित क्षेत्र (उत्तरी, दक्षिणी, पश्चिमी और पूर्वी) के बुनकर सेवा केन्द्रों के क्षेत्रीय निदेशक की अध्यक्षता में क्षेत्र स्तरीय चयन समिति द्वारा चयन किया जाता है। अलग–अलग क्षेत्रों से चुनी गई सभी प्रविष्टियों को विकास आयुक्त (हथकरघा) की अध्यक्षता में मुख्यालय स्तरीय चयन समिति के समक्ष रखा जाता है। अंततः विजेता प्रविष्टियों का चयन सचिव (वस्त्र) की अध्यक्षता में केन्द्र स्तरीय चयन समिति द्वारा किया जाता है। सभी त्रि–स्तरीय समितियों में सदस्य के रूप में गैर–सरकारी विशेषज्ञ भी होते हैं।

वर्ष 1965 से लेकर 2023 तक 608 हथकरघा बुनकरों, जिनमें से 102 महिलाएं हैं, को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान किए जा चुके हैं। राज्य–वार सूची इस प्रकार हैः

क्र. सं	राज्य/केन्द्र शासित प्रदेश	पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या
1.	आन्ध प्रदेश	40
2.	असम	20
3.	छत्तीसगढ़	05
4.	गुजरात	88
5.	हिमाचल प्रदेश	12
6.	जम्मू एण्ड कश्मीर	26
7.	झारखंड	02
8.	कर्नाटक	07
9.	केरल	03
10.	महाराष्ट्र	24
11.	मध्यप्रदेश	09
12.	मणिपुर	13
13.	मिजोरम	02
14.	नागालैंड	07
15.	राष्ट्रीय राजधनी क्षेत्र दिल्ली	03
16.	ओडिशा	98
17.	पंजाब	01
18.	राजस्थान	38
19.	सिक्किम	01
20.	तमिलनाडु	55
21.	तेलंगाना	09
22.	त्रिपुरा	06
23.	उत्तर प्रदेश	97
24.	पश्चिम बंगाल	41
25.	अरूणाचल प्रदेश	01
	सम्पूर्ण योग	608

NATIONAL HANDLOOM AWARDS FOR HANDLOOM WEAVERS

National Handloom Award is conferred to handloom weavers in recognition of their outstanding craftsmanship, contribution and development of handloom weaving. This award was introduced in the year 1965 and presently a maximum of 14 Awards are being given including 2 for woman (Kamladevi Chattopadhyay), 1 each for Young weaver, Divyang weaver, Languishing weaves and Tribal weaves to the outstanding handloom weavers. This recognition encourages them to continue with the weaving skill in a more enthusiastic and productive manner and will ultimately encourage others to emulate them.

Award and Financial Assistance: Award consists of a cash prize of ₹ 2,00,000/-, one tamrapatra, one shawl and a certificate.

Eligibility: An extraordinary skilled weaver who has contributed significantly in development of the handloom product and given noteworthy efforts in terms of reviving a languishing weaving product by way of product diversification, innovation of design etc., is considered for the National Award. The applicant should not be below the age of 30 years (except for young weaver category) and having 10 years of experience in the field of handloom weaving as on 31st December of previous year.

Selection Process: Three tier selection process is followed to finalize the winning entry. In the first tier, selection is done by the Zonal Level Selection Committee headed by the Zonal Director of WSCs of respective Zone i.e (North, South, West & East Zone). All the selected entries from the respective Zone are placed before Headquarter Level Selection Committee chaired by the Development Commissioner (Handlooms) for selection. The final winning entries are selected by the Central Level Selection Committee chaired by the Secretary (Textiles). All three level committees have non-official experts as members.

Since 1965 to 2023, 608 handloom weavers, have been conferred National Awards which include 102 woman. State wise list is as under.

S. No.	State/UT	Total No. of Awardees
1	Andhra pradesh	40
2	Assam	20
3	Chhattisgarh	05
4	Gujarat	88
5	Himachal Pradesh	12
6	Jammu & Kashmir	26
7	Jharkhand	02
8	Karnataka	07
9	Kerala	03
10	Maharashtra	24
11	Madhya Pradesh	09
12	Manipur	13
13	Mizoram	02
14	Nagaland	07
15	NCT Delhi	03
16	Odisha	98
17	Punjab	01
18	Rajasthan	38
19	Sikkim	01
20	Tamilnadu	55
21	Telangana	09
22	Tripura	06
23	Uttar Pradesh	97
24	West Bengal	41
25	Arunachal Pradesh	01
	Total	608

राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार
(डिज़ाइन विकास)

डिज़ाइन विकास हेतु राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार की शुरूआत 2015 से की गई है। यह पुरस्कार हथकरघा उत्पादों की उत्कृष्ट रूपांकन रचना, हथकरघा उत्पादों की बिक्री में बढ़ोतरी में उसके असर और बुनकरों के मेहनताने में वृद्धि के आधार पर दिया जाता है। सकारात्मक प्रभाव का आंकलन लाभान्वित बुनकरों की संख्या के आधार पर होता है। आवेदनकर्ता का डिज़ाइन कार्य 5 वर्षों से ज्यादा पुराना नहीं होना चाहिए । एक वर्ष में अधिकतम 2 राष्ट्रीय पुरस्कार दिये जा रहे हैं। पुरस्कार निम्न श्रेणियों में दिये जाते हैं।

- हथकरघा क्षेत्र में गैर सरकारी संस्था एवं अन्य संस्थान
- व्यक्तिगत डिजाइनर
- युवा डिजाइनर (अधिकतम आयु 30 वर्ष)

पुरस्कार और वित्तीय सहायता: राष्ट्रीय पुरस्कार में ₹ 2,00,000/-, नगद पुरस्कार, एक ताम्रपत्र, एक शॉल और एक प्रमाणपत्र शामिल हैं।

पात्रता: व्यक्तिगत डिजाइनर श्रेणी में आवेदक की आयु 30 वर्ष से अधिक होनी चाहिए। संस्थानों एवं व्यक्तिगत डिजाइनर आवेदकों को पिछले वर्ष की 31 दिसम्बर को हथकरघा के डिज़ाइन विकास के क्षेत्र में 10 वर्ष का अनुभव होना चाहिए। युवा डिजाइनर श्रेणी के आवेदक की आयु 30 वर्ष से अधिक नहीं होनी चाहिए । इस श्रेणी के लिए किसी अनुभव की अनिवार्यता नहीं है ।

चयन प्रक्रिया: विकास आयुक्त (हथकरघा) तथा सचिव (वस्त्र) की अध्यक्षता में क्रमशः मुख्यालय स्तर व केन्द्रीय स्तर की कमेटियां दो चरणों में विजेताओं का चयन करती है ।

वर्ष 2015 से लेकर अब तक "डिज़ाइन विकास" वर्ग में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या का विवरण।

क्र.सं.	श्रेणी	पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या
1.	हथकरघा क्षेत्र के लिए काम कर रहे गैर सरकारी संगठनों सहित संस्थान	1
2.	व्यक्तिगत डिजाइनर	4
3.	युवा डिजाइनर	0
	सम्पूर्ण योग	**5**

NATIONAL HANDLOOM AWARDS
(DESIGN DEVELOPMENT)

National Handloom Awards for Design Development was introduced in 2015. This award is given on the basis of comprehensiveness of the design of the handloom products in totality and its impact on enhancement of sale of handloom products and increase in wages of the weavers. The impact is judged by number of weavers benefitted. The design intervention should not be older than 5 years. Maximum of 2 National Awards are being given for a year. The Award is given in the following categories:

- Institutions including NGOs working for handloom sector
- Individual Designers
- Young designers (not more than 30 years of age)

Award and Financial Assistance: The National Award consists of a cash prize of ₹ 2,00,000/-, one tamrapatra, one shawl and a certificate.

Eligibility: The applicant should not be below the age of 30 years for Individual Designers category. Institution and Individual designer should have 10 years of experience in the field of design development of handlooms as on 31st December of the previous year. The age should not be more than 30 years for the Young Designer category. No experience is mandatory for this category.

Selection Process: Two tier selection processes is followed i.e. Head Quarter level and Central level selection committees chaired by Development Commissioner for Handlooms and Secretary (Textiles) respectively.

No. of National Awardees in the "Design Development" Category since 2015.

S. No.	Category	Total No. of Awardees
1.	Institutions including NGOs working for handloom sector	1
2.	Individual Designers	4
3.	Young Designers	0
	TOTAL	**5**

राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार
(हथकरघा उत्पाद विपणन)

हथकरघा उत्पादों के विपणन के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार की शुरूआत 2015 से की गई है। यह पुरस्कार पिछले वर्षों में हथकरघा उत्पादों के विपणन में नवीन साधनों को अंगीकार करने तथा बिक्री वृद्धि के आधार पर किया जाता है। हथकरघा उत्पादों के बिक्री आंकड़े केवल सनदी लेखाकार या संविधिक लेखा परीक्षक से प्रमाणित होने चाहिए। पिछले तीन वित्तीय वर्षों के आंकड़ो पर ही विचार किया जाता है । एक वर्ष में अधिकतम 2 राष्ट्रीय पुरस्कार दिये जा रहे हैं।
पुरस्कार निम्न पाँच श्रेणियों में दिये जाते हैं :

- प्राथमिक सहकारी समितियां
- एपेक्स सहकारी समितियां
- ई कॉमर्स प्लेटफार्म
- निर्यातक
- निजी संस्था / उद्यमी

पुरस्कार व वित्तीय सहायताः राष्ट्रीय पुरस्कार में ₹2,00,000/-, नगद पुरस्कार, एक ताम्रपत्र, एक शॉल और एक प्रमाणपत्र शामिल हैं।

पात्रताः आवेदक की आयु 30 वर्ष से कम नहीं होनी चाहिए। आवेदक को हथकरघा उत्पाद व विपणन के क्षेत्र में ई–कॉमर्स प्लेटफार्म श्रेणी के लिए 3 वर्ष तथा अन्य श्रेणी के लिए 10 वर्ष का अनुभव होना चाहिए ।

चयन प्रक्रियाः विकास आयुक्त (हथकरघा) तथा सचिव (वस्त्र) की अध्यक्षता में क्रमशः मुख्यालय स्तर व केन्द्रीय स्तर की कमेटियां दो चरणों में विजेताओं का चयन करती है ।

वर्ष 2015 से लेकर अब तक "हथकरघा उत्पाद विपणन" वर्ग में राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या का विवरण।

क्र.सं.	श्रेणी	पुरस्कार प्राप्तकर्ताओं की कुल संख्या
1.	प्राथमिक सहकारी समितियां	4
2.	एपेक्स सहकारी समितियां	1
3.	ई.कॉमर्स प्लेटफॉर्म	1
4.	निर्यातकों	0
5.	निजी संस्था/उद्यमी	4
	TOTAL	**10**

NATIONAL HANDLOOM AWARDS
(MARKETING OF HANDLOOM PRODUCTS)

National Handloom Awards for marketing of handloom products was introduced in 2015. This award is given on the basis of innovative measures adopted for marketing of handloom products and achievements in terms of increase in sales over past years. These awards are given after considering the growth in sales both in terms of volume and value. The sales figures only in respect of handloom products as certified by the Chartered Accountant or Statutory Auditor are considered. The figures for the last 3 financial years are considered. Maximum of 2 National Awards are being given for a year.
The Awards are given in the following 5 categories:

- Primary co-operative societies
- Apex co-operative societies
- E-commerce platforms
- Exporters
- Private entity/entrepreneurs

Award and Financial Assistance: The National Award consists of a cash prize of ₹ 2,00,000/-, one tamrapatra, one shawl and a certificate.

Eligibility: The applicant should not be below the age of 30 years. The applicant should have experience in the field of marketing of handloom products for 3 years for the E-commerce platform category and 10 years for other categories.

Selection Process: Two tier selection processes is followed i.e. Head Quarter level and Central level selection committees chaired by Development Commissioner for Handlooms and Secretary (Textiles) respectively.

No. of National Awardees in the "Marketing of Handloom Products" Category since 2015.

S.No.	Category	Total No. of Awardees
1.	Primary co-operative societies	4
2.	Apex co-operative societies	1
3.	E-commerce platforms	1
4.	Exporters	0
5.	Private entity/entrepreneurs	4
	TOTAL	**10**

शिल्पियों की उत्पत्ति

‘इस पट्टी में परम ब्रहमा से शिल्पियों और वास्तुकारों की आकृति जात और मानस जात प्रत्यक्ष उत्पत्ति प्रदर्शित की गई है। इस व्युत्पत्ति और मानस में शिल्पियों की उत्पत्ति की कथा में निकट सादृश्य है । यह पट्टी पीछे की तरफ तेलगू में उत्कीर्ण विलेख के साथ, सिद्धहस्त शिल्पियों एवं बुनकरों को राष्ट्रीय पुरस्कार प्रदान करने के लिए स्वीकार की गई है। शिल्पी की कला में वास्तविक महानता के तत्व तभी होते हैं जब उसे निष्ठा के साथ काम करने का अधिकार एवं अपने परिश्रम का समुचित पुरस्कार पाने का अधिकार होता है और साथ ही उसे अपने कार्य की सामाजिक और अध्यात्मिक सार्थकता पर चेतन अथवा अर्धचेतन विश्वास होता है ।

शिल्पी व्यक्तिगत भाव को प्रकट करने वाला व्यक्ति मात्र नहीं, बल्कि विश्व का एक अंग है । वह उसी प्रकार शाश्वत सौंदर्य और प्रकृति के अटल नियमों के आदर्शों को मूर्त रूप प्रदान करता है, जिस प्रकार वृक्ष और पुष्प करते हैं, जिनकी प्राकृतिक और अनियमित सुषमा ईश्वर प्रदत्त है’।

आनंद के. कुमारस्वामी

A DEED OF CRAFTPERSONS

'The tablet illustrates "Direct 'face-born' and 'mind-born' origin of the craftsmen an architect from the Supreme principle". The derivation has a close analogy in the account of the ontological origin of craftsmen in the Manasara. The tablet, with the deed engraved at the back of the brass plate with inscription in Telugu, has been adapted for presentation of National Awards to Master Craftpersons and Weavers.

.... It has only been when the craftsman has had the right to work, the right to the due reward of his labour, and at the same time a conscious or subconscious faith in a social and spiritual significance of his art that his art has possessed the elements of real greatness.

The craftsman is not an individual expressing individual whims, but a part of the universe, giving expressions to ideals of eternal beauty and unchanging laws, even as do the trees and flowers whose natural and less ordered beauty is not less God given’.

Ananda K. Coomaraswamy

संत कबीर हथकरघा पुरस्कार

Sant Kabir Handloom Awards

श्री खरेत देवजी भीमजी
सुपुत्र श्री भीमजी वेलजी
वानकर वास, ताल्लुक – भुजोड़ी,
जिला – कच्छ–370020
गुजरात
सम्पर्क : 9925313798

Shri Kharet Devji Bhimji
S/o Shri Kharet Bhimji Velji
Vankar Vas, Ta. Bhujodi,
District- Kutch-370020
Gujarat
Contact : 9925313798

श्री खरेट देवजी भीमजी सुपुत्र श्री खरेट भीमजी वेलजी का जन्म 25 मई 1972 को भुजोड़ी, जिला– कच्छ, गुजरात में हुआ। इन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपने पिता से सीखी है। वह पिछले 35 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे हैं। भुजोड़ी बुनाई तकनीक इन्हें दक्षता प्राप्त है। इन्होंने 40 बुनकरों को प्रशिक्षित किया है, जो बुनाई की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

हथकरघा के विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिये उन्हें संत कबीर हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Kharet Devji Bhimji S/o Shri Kharet Bhimji Velji was born on 25th May 1972 in Bhujodi, District- Kutch, Gujarat. He learnt the skill of traditional weaving technique from his father. He has been a traditional weaver for the last 35 years. He is an expert Bhujodi weaving. He has trained 40 weavers who are carrying the tradition of weaving forward.

He receives the Sant Kabir Handloom Award for his invaluable contribution towards the development of Handlooms.

भुजोड़ी साड़ी

Bhujodi Saree

कच्छ की यह साड़ी सूती ताने एवं रेशमी बाने से तैयार की गयी है। जटिल ज्यामितीय अतिरिक्त बाना रूपांकनो को, साड़ी पर सटीकता से बुना गया है। नील और लाख जैसे वनस्पति रंगों में रंगे धागे साड़ी को एक मनमोहक रंग प्रदान करते हैं। इस साड़ी को बुनने में लगभग छह महीने लगे है।

This is a Kutch saree made out of cotton warp and mulberry silk weft. Intricate geometrical extra weft designs are woven all over the saree with precision. The yarns dyed in vegetable dyes such as Indigo and lac render a soothing colour to the saree. It took around six months to complete this saree.

श्री राम कृष्णा मेहेर
सुपुत्र स्वर्गीय दामोदर मेहेर
मेहेर साड़ी, बंदुटिकरा चौक,
जिला – बारगढ़ – 768028
ओडिशा
सम्पर्क : 9437148423

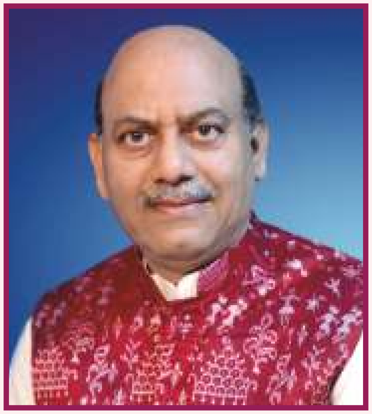

Shri Ram Krishna Meher
S/o Late Damodar Meher
Meher sarees, Bandutikra Chowk,
District- Bargarh - 768028
Odisha
Contact : 9437148423

श्री राम कृष्ण मेहेर सुपुत्र स्वर्गीय दामोदर मेहेर का जन्म 16 अक्टूबर 1965 को जिला बारगढ़, ओडिशा में हुआ। वह एक वंशानुगत हथकरघा बुनकर हैं और उन्होंने यह तकनीक अपने परिवार के सदस्यों से सीखी है। वह पिछले 35 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे है। संम्बलपुरी इकत बुनाई में इन्हें दक्षता प्राप्त है। इन्होंने 500 से अधिक बुनकरों को प्रशिक्षित किया है, जो बुनाई की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

हथकरघा के विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिये उन्हें संत कबीर हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Ram Krishna Meher S/o Late Damodar Meher was born on 16th October 1965 in Bargarh District, Odisha. He is a hereditary Handloom weaver and he learnt the technique from his family members. He has been a traditional weaver for the last 38 years. He is an expert Sambalpuri Ikat weaving. He has trained more than 500 weavers who are carrying the tradition of weaving forward.

He receives the Sant Kabir Handloom Award for his invaluable contribution towards the development of Handlooms.

राष्ट्रीय एकता साड़ी (विविधता में एकता)

Rastriya Ekta Saree
(Unity in Diversity)

विविधता में एकता की भावना को प्रतिध्वनित करते हुए, इस राष्ट्रीय एकता साड़ी पर सम्पूर्ण देश की विविधता को एक साथ दर्शाया गया है। साड़ी के पोत पर सभी राज्यों की पारंपरिक वेशभूषा की झलक दिखाई गई है। प्रमुख धर्मों के पूजा स्थल तथा उनकी धार्मिक पुस्तकें पल्लू में समाहित हैं। अद्भुत सफाई के साथ रूपांकनों को बनाने के लिए संबलपुरी बंध यानी इकत तकनीक का उपयोग किया गया है।

Echoing the spirit of Unity in diversity, the diversity across the country is brought together in this “Rashtriya Ekta saree”. The motifs of traditional dress code of people from all states have been shown on the body of the saree. The places of worship of the major religions along with their religious books lie merged in the pallu. Sambhalpuri Bandha or Ikat technique has been used to create the motifs with remarkable clarity.

श्री हरिलाल मेहेर
सुपुत्र श्री मंसी मेहेर
पोस्ट – झिलिमिन्डा वाया रेमुंडा
जिला– बरगढ़ –768028
ओडिशा
सम्पर्क : 9937471711

Shri Harilal Meher
S/o Shri Mansi Meher
Post- Jhiliminda, Via- Remunda,
Dist- Bargarh - 768103
Odisha
Contact : 9937471711

श्री हरिलाल मेहेर सुपुत्र श्री मानसी मेहेर का जन्म 7 नवम्बर 1948 को झिलीमिंडा, वाया– रेमुंडा, जिला–बारगढ़, ओडिशा में हुआ। उन्होंने श्री रत्नाकर मेहेर से पारंपरिक बुनाई तकनीक का कौशल सीखा। वह पिछले 65 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे हैं। संम्बलपुरी इकत बुनाई में इन्हें दक्षता प्राप्त है। इन्होंने 1051 बुनकरों को प्रशिक्षित किया है, जो बुनाई की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

हथकरघा के विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिये उन्हें संत कबीर हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Harilal Meher S/o Shri Mansi Meher was born on 7th November 1948 in Jhiliminda, Via- Remunda, Dist-Bargarh, Odisha.He learnt the skill of traditional weaving technique from Shri Ratnakara Meher. He has been a traditional weaver for the last 65 years. He is skilled Sambalpuri Ikat weaving. He has trained 1051 weavers who are carrying the tradition of weaving forward.

He receives the Sant Kabir Handloom Award for his invaluable contribution towards the development of Handlooms.

साचीपार दसफुलिया खादी साड़ी

Sachiper Dasphulia Khadi Saree

यह सचीपार दसफुलिया साड़ी इंद्र की पत्नी शची की सुंदरता, गरिमा और पवित्रता को दर्शाने के लिए रूपांकित की गई है। इसके किनारियों में दस पंक्तियो में मछली, फूल, तारा पुष्प, रुद्राक्ष आदि बिना किसी डॉबी अथवा जैकार्ड का उपयोग किये अतिरिक्त ताने से बुनी गयी हैं। साड़ी के आंचल पर देउली, हिरण, शेर आदि की रूपांकन बने हुये हैं। आंचल में धागों को रंगने के लिए प्राकृतिक रंगों का उपयोग किया गया है। पल्लू और पोत में डिज़ाइन संबलपुरी इकत तकनीक द्वारा बनाए गए हैं। विषय वस्तु के अनुरूप, इस प्राचीन रूपांकन को बुनने के लिए खादी के धागे का उपयोग किया गया है।

This Sachipar Das fulia saree is designed to represent the beauty, dignity & purity of Sachi, the wife of Indra. The border has ten rows of motifs of fish, flower, tara flower, Rudraksh, etc woven with extra warp , without the use of dobby or Jacquard. The Anchal of the saree has motifs of Deuli, deer, lion etc. Natural dyes have been used to dye the yarns in the Anchal. The designs in the pallu & body are created by Sambhalpuri Ikat technique. In line with the theme, Khadi yarns have been used to weave this ancient design scheme.

श्री मगनभाई दानाभाई वनकर
सुपुत्र श्री धानभाई भोजाभाई वानकर
गॉव –वनत नगर, ताल्लुक – अधोई,
जिला – कच्छ–370135
गुजरात
सम्पर्क : 9974028292

Shri Maganbhai Danabhai Vankar
S/o Shri Danabhai Bhojabhai Vankar
At. Vanat Nagar, Adhoi, Ta. Bhachau,
Dist. Kutch -370135
Gujarat
Contact : 9974028292

श्री मगनभाई धानभाई वानकर सुपुत्र श्री धानभाई भोजाभाई वानकर का जन्म 18 जनवरी, 1963 को वनत नगर, ताल्लुक– अधोई, जिला– कच्छ, गुजरात में हुआ। इन्होंने विलुप्त हो रही पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपने पिता से सीखा। वह पिछले 46 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे हैं। टांगलिया बुनाई में इन्हे दक्षता प्राप्त है। उन्होंने 300 बुनकरों को प्रशिक्षित किया है, जो बुनाई की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

हथकरघा के विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिये उन्हें संत कबीर हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Maganbhai Danabhai Vankar S/o Shri Danabhai Bhojabhai Vankar was born on 18th January 1963 in Vanat Nagar, Adhoi, Ta. Bhachau, Dist- Kutch, Gujarat. He learnt the skill of traditional languishing weaving technique from his father. He has been a traditional weaver for the last 46 years. The product he is skilled at Tangaliya weaving. He has trained 300 weavers who are carrying the tradition of weaving forward.

He receives the Sant Kabir Handloom Award for his invaluable contribution towards the development of Handlooms.

कच्छ की कलात्मक टांगलिया सूती रेशमी साड़ी

Artistic Kutchi Tangaliya Cotton Silk Saree

यह साड़ी टांगलिया तकनीक से बुनी गयी है, जिसमें विपरीत रंग के कपड़े पर बिंदु बनाने के लिए धागे को ताने के धागे के चारों ओर घुमाया जाता है। इन बिन्दुओं के रचनात्मक संयोजन से विभिन्न रूपांकन बुने जाते है। पल्लू के छोरो पर अतिरिक्त बानो के द्वारा हाथी, हिरण के बूटो को बुना गया है। जिनके मध्य में पंक्षियों, फूलों मोरो को टांगलिया तकनीक में बुना गया है। इसकी किनारियों पर अतिरिक्त ताने की आकृतियां बुनी गई हैं तथा इसके पोत में फूल, पक्षी, ऊंट और मानव आकृतियॉं व्याप्त है।

The saree is woven by tangaliya technique in which yarn is twisted around the warp yarn to create dots on contrast coloured fabric. Such dots are carefully placed to create design. The pallu is created with extra weft motifs of elephant, deer as cross borders with in which motifs of birds, flowers, peacocks have been woven in tangaliya technique. The borders are woven with extra weft motifs & the body is replete with flower, bird camel and human figures.

कमलादेवी चट्टोपाध्याय संत कबीर हथकरघा पुरस्कार

Kamaladevi Chattopadhyay Sant Kabir Handloom Awards

श्रीमती वाहेंबाम शाया देवी
पत्नी श्री चुंगखाम नबाकुमार सिंह
वांगखेई लौरेंबम लीकाई,
पूर्वी इंफाल – 795001
मणिपुर
सम्पर्क : 9089353850

Smt. Wahengbam Shaya Devi
W/o Shri Chungkham Nabakumar Singh
Wangkhei Lourembam Leikai,
Imphal East - 795001
Manipur
Contact : 9089353850

श्रीमती वाहेंबम शाया देवी पत्नी श्री चुंगखाम नबाकुमार सिंह का जन्म 1 फरवरी, 1967 को वांगखेई लौरेंबम लीकाई, पूर्वी इंफाल, मणिपुर में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपनी बड़ी बहन श्रीमती भानुबती देवी से सीखा है। वह पिछले 45 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं। इनाफी बुनने में इन्हें कुशलता प्राप्त है। इन्होंने 300 बुनकरों को प्रशिक्षित किया है जो बुनाई की परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं।

हथकरघा के विकास में उनके अमूल्य योगदान के लिये उन्हें कमलादेवी चट्‌टोपाध्याय संत कबीर हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Smt. Wahengbam Shaya Devi W/o Shri Chungkham Nabakumar Singh was born on 1st February 1967 in Wangkhei Lourembam Leikai, Imphal East, Manipur. She learnt the skill of traditional weaving technique from her elder sister Smt. Bhanubati Devi. She has been a traditional weaver for the last 45 years. She is skilled Enaphaa weaver. She has trained 300 weavers who are carrying the tradition of weaving forward.

She receives the Kamaladevi Chattopadhyay Sant Kabir Handloom Award for her invaluable contribution towards the development of Handlooms.

सारोंग फी

Sarong Phee

सिल्क इनाफी को मैतेई महिलाओं द्वारा विशेष अवसरों पर पहना जाता है। यह सारोंग फी खोई माचा, थम्बल चप्लेई, लिशा, क्वाक्लेई माचा, खोई लेई रूपांकनों के संयोजन से बनाई गई है। इसमें दो टुकड़ों को अलग–अलग बुना जाता है और फिर एक साथ सिल दिया जाता है। इसे अतिरिक्त बाना बुनाई तकनीक का उपयोग करके थ्रो शटल फ्रेम लूम पर बुना गया है।

Silk Inaphee is worn by Meitei women during special occasions. This Sarong Phee is made by combination of Khoi Macha, Thambal Chplei, Lisha, Kwaklei Macha, Khoi Lei motifs. Two pieces are separately woven & stiched together. It has been woven on a throw shuttle frame loom using extra weft weaving technique.

राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार

National Handloom Awards

श्री एम. बालासुब्रमण्यम
सुपुत्र श्री ए. मुरुगेसन
नंबर 18/26, कृष्णन स्ट्रीट,
पिल्लैयारपालयम,
कांचीपुरम–631501
तमिलनाडु
सम्पर्क : 7448301125

Shri M. Balasubramanian
S/o Shri E. Murugesan
No.18/26, Krishnan Street,
Pillaiyarpalayam,
Kanchipuram-631501
Tamilnadu
Contact : 7448301125

श्री एम बालसुब्रमण्यन सुपुत्र श्री ए. मुरुगेसन का जन्म 9 जून 1969 को पिल्लैयारपालयम, कांचीपुरम, तमिलनाडु में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपने पिता से सीखी है। वह पिछले 38 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे है।

उन्हें "कांचीपुरम सिल्क साड़ी" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri M. Balasubramanian S/o Shri E. Murugesan was born on 9th June 1969 in Pillaiyarpalayam, Kanchipuram, Tamilnadu. He learnt the skill of traditional weaving technique from his father. He has been a traditional weaver for the last 38 years

He receives the National Handloom Award for excellence in "Kancheepuram Silk Saree" weaving.

कांचीपुरम सिल्क साड़ी
Kancheepuram Silk Saree

उत्थित पिटलूम पर बनी इस कांचीपुरम साड़ी में पोत के ताने को विपरीत रंग के पल्लू के ताने से पेटनी तकनीक द्वारा जोड़कर बुना गया है। किनारियो को कंगूरो के साथ स्पष्ट रंग में बुनने के लिये तीन शटल (कोरवाई तकनीक) का उपयोग किया गया है। पल्लू में हाथी, हंस, कैरी और चक्र की श्रंखला इस साड़ी को और निखार रहे है।

This Kancheepuram saree, woven on a raised pitloom, has pallu woven in contrasting colour by engaging another warp through Petni technique. The solid border with temples is woven by three shuttle weaving (Korvai). Chakras containing elephant motifs adorn the border. The pallu displays an array of elephant, hamsa, paisley and chakra motifs.

श्री जी. बालाकृष्णन
सुपुत्र श्री गोपाल
5/143, साउथ स्ट्रीट, नल्लमपट्टी,
डिंडीगुल, तमिलनाडु
सम्पर्क : 9952363725

Shri G. Balakrishnan
S/o Shri Gopal
5/143, South Street, Nallampatti,
Dindigul, Tamilnadu.
Contact : 9952363725

श्री जी बालाकृष्णन सुपुत्र श्री गोपाल का जन्म 27 जुलाई 1980 को नल्लमपट्टी, डिंडीगुल, तमिलनाडु में हुआ। वह पिछले 20 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे है।

उन्हें "डिंडीगुल सूती साड़ी" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri G. Balakrishnan S/o Shri Gopal was born on 27th July 1980 in Nallampatti, Dindigul, Tamilnadu. He has been a traditional weaver for the last 20 years.

He receives the National Handloom Award for excellence in "Dindigul Cotton Saree" weaving.

डिंडीगुल सूती साड़ी

Dindigul Cotton Saree

बारीक सूत से बनी हुई यह साड़ी डिंडीगुल सूती साड़ी की प्रख्यात किस्म से संबन्धित है। साड़ी के किनारे रूद्रचम बूटो से सुसज्जित है, जबकि पल्लू में जैकार्ड के द्वारा कैरी, तोता और हाथी को बुना गया है। पोत में बनी महीम अति आकर्षक हैं। यह साड़ी अत्यन्त पारंपरिक रूपांकनो में बुनी गयी है।

This saree belongs to famous variety of Dindigul cotton saree woven using 80s cotton yarn. The border has Rudratcham motifs whereas the Pallu has paisley, parrot & elephant motifs woven using Jacquard. Fine lines in the body enhance the visual appeal. The design in this saree is very traditional.

श्री मुकेश कर्नाटी
सुपुत्र श्री कर्नाटी नारायण
मकान नंबर : 6 – 193, कोय्यलागुडम,
छोटुप्पल यदाद्री,
भुवनगिरि– 508252
तेलंगाना
सम्पर्क : 8885200110

Shri Mukesh Karnati
S/o Shri Karnati Narayana
H.No:6-193, Koyyalagudem,
Choutuppal, Yadadri,
Bhuvanagiri-508252
Telangana
Contact : 8885200110

श्री मुकेश कर्नाटी सुपुत्र श्री कर्नाटी नारायण का जन्म 7 फरवरी 1992 को कोय्यलागुडम, छोटुप्पल, यदाद्री, भुवनगिरि, तेलंगाना में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपने पिता से सीखी है। वह पिछले 15 वर्षो से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे है।

उन्हें ''100 रूपांकनों की प्राकृतिक रंगाई वाली डबल इकत साड़ी '' बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Mukesh Karnati S/o Shri Karnati Narayana was born on 7th Feb 1992 in Koyyalagudem, Choutuppal, Yadadri, Bhuvanagiri, Telangana. He learnt the skill of traditional weaving technique from his father. He has been a traditional weaver for the last 15 years.

He receives the National Handloom Award for excellence in “Natural Dyed Double Ikat Saree with 100 Motifs” weaving.

100 रूपांकनों की प्राकृतिक रंगाई वाली डबल इकत साड़ी

Natural Dyed Double Ikat Saree with 100 Motifs

यह साड़ी दो पारंपरिक तकनीकों यानी डबल इकत बुनाई और प्राकृतिक रंगाई के संयोजन से बुनी गई है। कपड़े के धागों को रंगने के लिए इंडिगो, मंजिष्ठ, कत्था और अनार का उपयोग किया गया है। इस साड़ी की विशेषता इसके 100 रूपांकन है जिन्हें क्रमवद्ध तरीके से साड़ी के पोत में सटीकता से बुना गया है।

This saree is woven with the combination of two traditional technique i.e. double Ikat weaving & natural dyeing. Indigo, madder, catechus & pomegranate have been used to dye the yarns in the fabric. The speciality of the saree is that it contains 100 motifs which have been carefully woven in to the body of the saree.

श्री रसानंद मेहेर
सुपुत्र श्री निर्मल मेहेर
तिकिरापाड़ा, पोस्ट – सुबल्या
जिला – सुबर्नपुर – 767018
ओडिशा
सम्पर्क : 9938580881

Shri Rasananda Meher
S/o Shri Nirmal Meher
Tikirapada, Post - Subalya,
District- Subarnapur -767018
Odisha
Contact : 9938580881

श्री रसानंद मेहेर सुपुत्र श्री निर्मल मेहेर का जन्म 15 अप्रैल 1959 को तिकिरापाड़ा, पोस्ट– सुबल्या, जिला– सुबर्नपुर, ओडिशा में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को श्री प्रफ्फुल्ला मेहेर से सीखा है। वह पिछले 49 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे हैं।

उन्हें "ओडिशा की जीआई विरासत" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Rasananda Meher S/o Shri Nirmal Meher was born on 15th April 1959 in Tikirapada, Post- Subalya, District - Subarnapur, Odisha. He learnt the skill of traditional weaving technique from Shri Prafulla Meher. He has been a traditional weaver for the last 49 years.

He receives the National Handloom Award for excellence in “GI Heritage of Odisha saree” weaving.

ओडिशा की जीआई विरासत साड़ी

GI Heritage of Odisha Saree

यह साड़ी ओडिशा के जीआई पंजीकृत उत्पादों को समर्पित है। साड़ी में ओडिशा के 17 जीआई पंजीकृत उत्पादों को, उनके संबंधित नामों और जीआई कोड के साथ, गोलाकार आकृति में दर्शाया गया है। संबलपुरी सिंगल इकत तकनीक से रूपांकनो को बुना गया है तथा पल्लू में तीन लिपियों क्रमशः उडिया, हिन्दी व अंग्रेज़ी को रूपांकित गया है। इस साड़ी को बुनने में 152 दिन लगे हैं।

The saree is dedicated to the GI registered products from Odisha. 17 GI registered Odisha products feature, within circles, in the saree along with their respective names and GI codes. The designs are made by Sambhalpuri single ikat technique. The pallu also features three scripts viz. Odiya, Hindi & English. It took 152 days to weave the saree.

श्री खैरुद्दीन शेख
सुपुत्र श्री अबू मलिक शेख
पोस्ट – लखीपुर, थाना–पूर्वस्थली
जिला – पूर्व बर्धमान – 713512
पश्चिम बंगाल
सम्पर्क : 6296021184

Shri Khayer Uddin Sekh
S/o Shri Abu Malek Sekh
Post - Lakhipur, P.S. - Purvasthali
Dist. - East Bardhaman - 713512
Contact : 6296021184

श्री खैरुद्दीन शेख सुपुत्र श्री अबू मलिक शेख का जन्म 1 जनवरी 1976 को पूर्व बर्धमान में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को श्री अजितुद्दीन शेख से सीखा है। वह पिछले 20 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे हैं।

उन्हें "खादी सूती जामदानी साड़ी" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Khayeruddin Sekh S/o Shri Abu Malek Sekh was born on 1st January 1976 in East Bardhaman. He learnt the skill of traditional weaving technique from Shri Ajituddin Sekh. He has been a traditional weaver for the last 20 years.

He receives the National Handloom Award for excellence in "Khadi Cotton Jamdani Saree" weaving.

खादी सूती जामदानी साड़ी

Khadi Cotton Jamdani Saree

यह जामदानी साड़ी विभिन्न प्रकार के जामदानी रूपांकनों से युक्त है। बुनकर ने इन रूपांकनों और आकृतियों को चौकोर खानो में बुना है। इस साड़ी में ताने में 100 काउंट का सूती धागा तथा बाने में 150 काउंट की खादी का प्रयोग किया गया है। साड़ी में जामदानी को प्रभावी रूप से प्रदर्शित करने हेतु 150 काउंट का 6 प्लाई खादी धागा और टेस्टेड सुनहरी ज़री का उपयोग अतिरिक्त ताने के रूप में किया गया है।

This Jamdani saree is interspersed with variety of Jamdani motifs. The weaver has woven these patterns and motifs in square blocks. 100s cotton yarn in warp and 150 count khadi is used as weft in this saree. 150 count, 6 ply khadi yarn and tested golden zari are used as extra weft to create Jamdani effect in the saree.

श्री उत्तम कुमार मेहेर
सुपुत्र श्री लक्ष्मी चरण मेहेर
सागरपाली, पोस्ट – मल्लिकमुंड
जिला – सुबर्णपुर – 767017
ओडिशा
सम्पर्क : 9583558730

Shri Uttam Kumar Meher
S/o Shri Laxmi Charan Meher
Sagarpali, P.O. Mallikmund
Dist. Subarnapur -767017
Odisha
Contact: 9583558730

श्री उत्तम कुमार मेहेर सुपुत्र श्री लक्ष्मी चरण मेहेर का जन्म 2 जून 1983 को सागरपली, पोस्ट ऑफिस – मल्लिकमुंड, जिला– सुबर्णपुर, ओडिशा में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को श्री प्रफ्फुल्ला मेहेर से सीखी है। वह पिछले 20 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे है।

उन्हें "सप्त चक्र साड़ी" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Uttam Kumar Meher S/o Shri Laxmi Chandra Meher was born on 2nd June 1983 in Sagarpali, P.O. Mallikmund Dist. Subarnapur, Odisha. He learnt the skill of traditional weaving technique from Shri Prafulla Meher. He has been a traditional weaver for the last 20 years.

He receives the National Handloom Award for excellence in "Sapta Chakra Saree" weaving.

सप्त चक्र साड़ी

Sapta Chakra Saree

यह सप्त चक्र सिल्क साड़ी टाई एंड डाई (संबलपुरी बंध) तकनीक से बुनी गयी है। इसे ताने में 3 प्लाई आरगेन्जा सिल्क और बाने में 4 प्लाई चरखा सिल्क का उपयोग करके बुना गया है। साड़ी में बुने डिजाइन का विषय मानव शरीर में स्थित सात चक्रों के इर्द–गिर्द घूमता है। इसका पल्लू मानव शरीर में सात चक्रों की स्थिति को दर्शाता है। प्रत्येक चक्र का प्रतीक भी दर्शाया गया है। सूर्य नमस्कार की सभी योग मुद्राएं साड़ी के पोत में बुनी गई हैं।

This is a Tie & Dye (Sambalpuri bandha) Sapta Charkha silk saree. It is woven using 3 ply organzine silk in warp & 4 ply charakha mulberry silk in weft. The design theme revolves around the seven Chakras in a human body. The pallu depicts the position of seven chakras in human body. The symbols of each Charak is also shown. All Surya Namaskar yoga poses are woven in the entire body of saree.

श्री फरीद अहमद गनाई
सुपुत्र श्री गुलाम हसन गनाई
बाटापोरा कानीहामा,
बीरवाह, बडगाम – 193401
जम्मू और कश्मीर
सम्पर्क : 8803354937

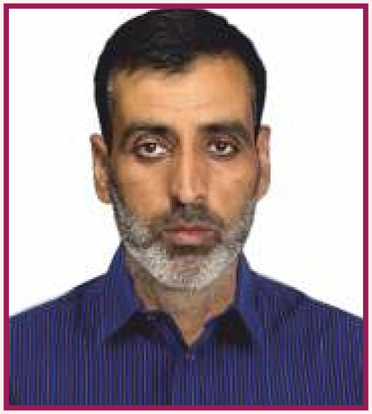

Shri Fareed Ahmed Ganie
S/o Shri Ghulam Hassan Ganie
Batapora Kanihama, Beerwah,
Budgam - 193401
Jammu and Kashmir
Contact: 8803354937

श्री फरीद अहमद गनाई सुपुत्र श्री गुलाम हसन गनाई का जन्म 1 दिसम्बर 1984 को बाटापोरा कानीहामा, बीरवाह, बडगाम, जम्मू और कश्मीर में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपने पिता से सीखी है। वह पिछले 19 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे है।

उन्हें "कानी पालदार शॉल" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Fareed Ahmed Ganie S/o Shri Ghulam Hassan Ganie was born on 1st December 1984 in Batapora Kanihama, Beerwah, Budgam, Jammu and Kashmir. He learnt the skill of traditional weaving technique from his father. He has been a traditional weaver for the last 19 years.

He receives the National Handloom Award for excellence in "Kani Paldar Shawl" weaving.

कानी पालदार शॉल

Kani Paldar Shawl

पश्मीना कानी शॉल अपने जटिल रूपांकनों और कोमलता के लिये जाने जाते है। इस शॉल में बादामदार बूटे को कश्मीरी पारंपरिक हथकरघे पर बुना गया है। तालीम (बुनकर के लिये डिज़ाइन कोड) का उपयोग करते हुये इन बूटो को 9 रंगों में लगभग 350 कानी के द्वारा बुना गया है, जो बेहद आकर्षक है।

Pashmina Kani Shawls are known for their intricate designs & softness. This shawl, woven on traditional Kashmiri Loom, Badaamdar design in the cross border. The designs are created in 9 colours using design codes of the Talim, reverse side up using near about 350 Kanis.

श्रीमती मेघाली दास
पत्नी श्री शिखर दास
एम. एस. रोड, मकान नम्बर–46,
उज़ानबाज़ार, कामरूप मेट्रो,
गुवाहाटी – 781001
असम
सम्पर्क : 9435544392

Smt. Meghali Das
W/o Shri Shikar Das
M. C. Road, H. No. 46,
Uzanbazar, Kamrup Metro,
Guwahati - 781001
Assam
Contact : 9435544392

श्रीमती मेघाली दास पत्नी श्री शिखर दास का जन्म 8 जनवरी, 1986 को उज़ानबाजार, कामरूप मेट्रो, गुवाहाटी, असम में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपनी माता जी श्रीमती गणेशवरी देवरी से सीखी है। वह पिछले 32 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं।

उन्हें "मूगा सिल्क मेखला चादर" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Smt. Meghali Das W/o Shri Shikar Das was born on 8th January 1986 in Uzanbazar, Kamrup Metro, Guwahati, Assam. She learnt the skill of traditional weaving technique from her mother Smt. Ganeswari Dewri. She has been a traditional weaver for the last 32 years.

She receives the National Handloom Award for excellence in "Muga Silk Mekhela Chadar" weaving.

मूगा सिल्क मेखला चादर

Muga Silk Mekhela Chadar

मेखला चादर असम की महिलाओं द्वारा पहना जाने वाला एक पारंपरिक वस्त्र है जो कि परम्परा और सम्यता के लिये जाना जाता है। इस चादर में नैसर्गिक सुनहरी आभा वाले मूगा रेशम को ताने और बाने के लिये उपयोग किया गया है और प्राकृतिक रंगों से रंगा इरी स्पन सिल्क से बूटों को बुना गया है। इस चादर में रभा एवं मिशिंग समुदायों के जनजातीय पारंपरिक बूटे और वनस्पति एवं जीवों के रूपांकनो को जैकार्ड प्रणाली द्वारा थ्रो शटल तकनीक से बुना गया है।

Mekhala Chadar is a traditional dress, worn by women of Assam and is known as symbol of tradition and elegance. Natural golden coloured Muga silk is used in warp and weft of the Mekhla Chadar, while Eri spun silk, dyed with natural colours has been used in the designs. The tribal traditional motifs of Rabha and Mishing communities along with flora & fauna motifs are woven by throw shuttle technique using jacquard mechanism.

श्री जेठा राम
सुपुत्र श्री मधु राम
थाट, जैसलमेर – 345021
राजस्थान
सम्पर्क : 9057212167

Shri Jetha Ram
S/o Shri Madhu Ram
That, Jaisalmer - 345021
Rajasthan
Contact : 9057212167

श्री जेठा राम सुपुत्र श्री मधु राम का जन्म 27 नवम्बर 2000 को जैसलमेर में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कला कौशल को अपने पिता से सीखी है। वह पिछले 6 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रहे है।

उन्हें "पट्टू साड़ी" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए ''युवा बुनकर'' की श्रेणी में राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Jetha Ram S/o Shri Madhu Ram was born on 27th November 2000 in That, Jaisalmer. He learnt the skill of traditional weaving techniques from his father. He has been a traditional weaver for the last 6 years.

He receives the National Handloom Award for excellence in “Pattu Saree” weaving under the “Young Weaver” category.

पट्टू साड़ी
Pattu Saree

यह साड़ी, राजस्थानी पट्टू जो कि एक ऊनी शॉल की अनुरूपण है। इसके प्रतिमान और बूटे पट्टू से प्रेरित है। इस साड़ी में झोपड़ी, पेड़, चिड़ियों, ऊटों और रेत के टीले के रूपांकनों को अतिरिक्त बाना तकनीक से बुना गया है। इस साड़ी की बुनाई में किसी प्रकार का जैकार्ड या जाला तकनीक का उपयोग नहीं किया गया है।

This saree is an adaptation of the Rajasthani Pattu which is essentially a woollen shawl. The patterns and designs have been taken from the Pattus. The saree contains motifs of huts, trees, birds, camels and sand dunes woven by extra weft technique. No jacquard or jala has been used in weaving the design.

श्रीमती नबम यापी
पत्नी श्री नबम डोखो
गांव – डोबम, बांदेदेव
पापुम पारे – 791123
अरुणाचल प्रदेश
सम्पर्क : 9856206738

Smt. Nabam Yapi
W/o Shri Nabam Dokho
Dobam Village, Bandedewa
Papum Pare - 791123
Arunachal Pradesh
Contact : 9856206738

श्रीमती नबम यापी पत्नी श्री नबम डोखो का जन्म 17 मार्च, 1973 को डोबम गांव, बांददेव, पापुम पारे, अरुणाचल प्रदेश में हुआ। वह पिछले 21 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं।

उन्हें "डंपिंग गाले सेट" की बुनाई में उत्कृष्टता के लिए ''लुप्तप्राय बुनाई'' की श्रेणी में राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Smt. Nabam Yapi W/o Shri Nabam Dokho was born on 17th March 1973 in Dobam Village, Bandedewa Papum Pare, Arunachal Pradesh. She has been a traditional weaver for the last 21 years.

She receives the National Handloom Award for excellence in "Dumping Gale Set" weaving under the "Languishing Weave" category.

डंपिंग गाले सेट
Dumping Gale Set

डंपिंग गाले त्योहारो और विवाह समारोह में अरूणाचल प्रदेश की नियशी जाति की महिलाओं द्वारा लपेटे जाने वाला एक पारंपरिक वस्त्र है। यह नमूना गाले ब्लाऊज एवं स्कार्फ का एक सेट है। पोमपोम पफ्फ और आधार वस्त्र को बुननें में इरी स्पन सिल्क का उपयोग किया गया है जबकि मूगा और टसर रेशम का उपयोग समानांतर रेखाओं की आयताकार आकृतियों (रूपांकनों) को बुनने में किया गया है।

Dumping Gale is a traditional wrap around attire worn by women of Nyishi tribe of Arunachal Pradesh during the festivals and weddings. This sample is a set of gale, a blouse and a scarf. Eri spun silk is used in base fabric and pompom puffs whereas Muga and Tussar silk are used to form the parallel horizontal lines forming rectangular shapes.

सुश्री निर्मला सिन्हा
सुपुत्री स्वर्गीय गौर चंद सिन्हा
बारासुरमा, हलहुली,
जिला – धलाई – 799285
त्रिपुरा
सम्पर्क : 8729945119

Miss. Nirmala Sinha
D/o Late Gour Chand Sinhawas
Barasurma, Halhuli,
Dhalai-799285
Tripura
Contact : 8729945119

सुश्री निर्मला सिन्हा सुपुत्री स्वर्गीय गौर चन्द सिन्हा का जन्म 7 जुलाई 1972 को बारासुरमा, हलहुली, धलाई, त्रिपुरा में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपनी माताजी श्रीमती जयन्ती देवी से सीखी है। वह पिछले 37 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं।

उन्हें "इनाफी" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए ''दिव्यांग बुनकर'' की श्रेणी में राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Miss. Nirmala Sinha D/o Late Gour Chand Sinha was born on 7th July 1972 in Barasurma, Halhuli, Dhalai, Tripura. She learnt the skill of traditional weaving techniques from her mother Smt. Jayanti Devi. She has been a traditional weaver for the last 37 years.

She receives the National Handloom Award for excellence in 'Enaphi' weaving under the "Divyang Weaver" category.

इनाफी

Enaphi

इनाफी मणिपुर की महिलाओं द्वारा उपयोग किये जाने वाला वस्त्र है जो कि दुपट्टे के जैसा होता है। स्थानीय प्राकृतिक सामग्री (छाल/फूल/पत्तियॉं इत्यादि) से रंगें हुये बारीक सूती धागे से इसको बुना जाता है। मोइरंग किनारियो पर और खाओरी और कबाक डिज़ाइन साथ ही छोर पर सेथक और लेई (फूल) अतिरिक्त बाने जामदानी तकनीक द्वारा मणिपुरी हथकरघे पर इनाफी में बुनें गये है।

Enaphi is traditional Manipuri attire similar to dupatta, which is used by women of Manipur. Fine cotton yarn dyed with local natural materials has been used to weave this sample. The temple design - Moirang along the selvedge and jig-jag patten- Khaori Mathek & Kabak on the body as well as cross borders designs Cethek & Lei (flower) are woven through extra weft Jamdani technique on Manipuri loom.

सुश्री वनलालरूआती
सुपुत्री श्री लालरोखावमा
डी–1, रामहलनवेन्थर,
आइजोल – 796012
मिज़ोरम
सम्पर्क : 8414959953

Miss. Vanlalruati
D/o Shri Lalrokhawma
D-1, Ramhlunvengthar,
Aizwal - 796012
Mizoram
Contact : 8414959953

सुश्री वनलालरूआती सुपुत्री श्री लालरोखावमा का जन्म 28 सितम्बर 1992 को रामहलनवेन्थर, आइजोल, मेज़ोरम में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपनी माताजी से सीखा। वह पिछले 12 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं।

उन्हें "जनजातीय रूपांकनयुक्त मेजपोश" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए ''जनजातीय बुनकर'' की श्रेणी में राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Miss. Vanlalruati D/o Shri Lalrokhawma was born on 28th September 1992 at Ramhlunvengthar, Aizwal, Mizoram. She learnt the skill of traditional weaving techniques from her mother. She has been a traditional weaver for the last 12 years.

She receives the National Handloom Award for excellence in 'Tribal Design Table Cloth' weaving under the "Tribal Weaver" category.

जनजातीय रूपांकनयुक्त मेज़पोश
Tribal Design Table Cloth

ये जनजातीय डिज़ाइन मेजपोश पुआन का एक संशोधित रूप है। पुआन मेज़ोरम की महिलाओं द्वारा पहने जाने वाला वस्त्र है। मेजपोश पर रूपांकन रचना 'सेनियर' कहलाती है जो कि जनजातीय डिज़ाइन है और जिसे रंगीन चमकदार सूती धागों से अतिरिक्त बाना तकनीक से बुना गया है। अंगुलियो का उपयोग करते हुये ताने के धागों को चुनकर मेजपोश में डिज़ाइन डाली गयी है जो कि बुनकर की दक्षता को प्रदर्शित करता है।

This Tribal design Table Cloth is a modified version of Puan. Puan is used by women in Mizoram as bottom wear. Design pattern on the table cloth is called "Senior" which is a tribal design and is woven using bright coloured cotton yarn through extra weft technique. Designs have been made by manually selecting the warp threads using fingers.

कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार

Kamaladevi Chattopadhyay National Handloom Awards

श्रीमती लीला वंती
पत्नी श्री बलविंदर पाल
गांव – आंगु डोभी, पोस्ट – पुइद,
थाना – कुल्लू, जिला – कुल्लू –175101
हिमाचल प्रदेश
सम्पर्क : 6230588719

Smt. Leela Vanti
W/o Shri Balvinder Pal
Vill. Angu Dobhi, P.O.-Puid,
PS- Kullu, Distt. Kullu-175101
Himachal Pradesh
Contact: 6230588719

श्रीमती लीला वंती पत्नी श्री बलविंदर पाल का जन्म 1 अप्रैल 1984 को गांव– आंगु डोभी, पोस्ट – पुइद, थाना– कुल्लू, जिला–कुल्लू, हिमाचल प्रदेश में हुआ। इन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपने पिता श्री जोग राम से सीखी है। वह पिछले 20 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं।

उन्हें "कुल्लू शॉल" की बुनाई में उत्कृष्टता हेतु कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

Smt. Leela Vanti W/o Shri Balvinder Pal was born on 1st April 1984 in Vill. Angu Dobhi, P.O.-Puid, P.S.- Kullu, Distt. Kullu, Himachal Pradesh. She learnt the skill of traditional weaving technique from her father Shri Jog Ram. She has been a traditional weaver for the last 20 years.

She receives the Kamaladevi Chattopadhyay National Handloom Award for excellence in "Kullu Shawl" weaving.

कुल्लू शॉल
Kullu Shawl

कुल्लू शॉल अपने जीवंत रंगों और ज्यामितीय रूपांकनों के लिये जाने जाते है। यह शॉल समसामयिक तरीकों द्वारा बनाया जाता है। इंटरलॉक तकनीक द्वारा पारंपरिक बूटे जैसे मोर पंजा, चरम और कंगूरे शॉल की बॉडी पर और आधुनिक ज्यामितीय रूपांकन इस शॉल के छोर पर बुने गये है।

Kullu Woollen Shawl are known for their vibrant colours & geometrical designs. This shawl has been woven in a contemporary style. The traditional motifs namely Mor panja, chashm & temple are woven through interlock technique on the body and modern geometrical designs are woven in the cross border of this shawl.

श्रीमती वेकुवोलु डोज़ो
पत्नी श्री थुपुझोई डोज़ो
मकान नंबर : 192, न्यूलैंड रोड,
सीआईएचएसआर अस्पताल
नागा यूनाइटेड गांव, रुवे खेल,
जिला – दीमापुर – 797115
नागालैंड
सम्पर्क : 6386117328

Smt. Vekuvolu Dozo
W/o Shri Thupuzhoi Dozo
H. No. 192, Niuland Road,
CIHSR Hospital,Naga United Village,
Ruve Khel, District- Dimapur- 797115
Nagaland
Contact : 6386117328

श्रीमती वेकुवोलु डोज़ो पत्नी श्री थुपुझोई डोज़ो का जन्म 11 जून 1982 को नागा यूनाइटेड गांव, रूवे खेल, जिला– दीमापुर में हुआ। उन्होंने पारंपरिक बुनाई तकनीक के इस कौशल को अपनी चाची श्रीमती वेटसोहुलु डोज़ो से सीखी है। वह पिछले 20 वर्षों से पारंपरिक बुनकर के रूप में कार्य कर रही हैं।

उन्हें "समसामयिक नागा थ्रो" बुनाई में उत्कृष्टता के लिए कमलादेवी चट्टोपाध्याय राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Smt. Vekuvolu Dozo W/o Shri Thupuzhoi Dozo was born on 11th June 1982 in Naga United Village, Ruve Khel, District- Dimapur. She learnt the skill of traditional weaving technique from her aunty Smt. Vetsohulu Dozo. She has been a traditional weaver for the last 20 years.

She receives the Kamaladevi Chattopadhyay National Handloom Award for excellence in "Diversified Naga Throw" weaving.

समसायिक नागा थ्रो

Diversified Naga Throw

इस लोइन लूम पर बुने थ्रो में लाल व काले रंगों में नागा जनजातीय पारम्परिक रूपांकनो को समसामयिक रूप में प्रस्तुत किया गया है। लोइन लूम पर तीन अलग–अलग वस्त्र बनायें गये है जिनको कोरूजो नामक हाथ की सिलाई से एकरूपता रखते हुये सिला गया है। रूपांकनों को अतिरिक्त बाने से बॉस की बारीक डंडियों (हील्ड/कंघी) और फटके का उपयोग करते हुये बुना गया है। जिससे बहुत गक कपड़ा बनता है।

Woven on loin loom with the 'naga' tribal traditional design (diversified pattern) in its colour of red & black, it is a diversification of Naga shawl into a throw. Three different pieces of cloth were woven separately on a loin loom & then stitched together by hand stitch called "Koruzo" maintaining the alignment. The design has been woven in extra weft manner with the use of extra heald / bamboo sticks and the beater, forming heavily dense fabric.

डिज़ाइन विकास हेतु राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार

National Handloom Awards for Design Development

श्री सौमित्र मंडल
सुपुत्र श्री चित्ररंजन मंडल
56 विश्वेश्वर बैनर्जी लेन
कडमतला, हावड़ा – 711101
पश्चिम बंगाल
सम्पर्क : 9830308707

Shri Soumitra Mondal
S/o Shri Chitranjan Mondal
56, Bisweswar Banerjee Lane,
Kadamtala, Howrah - 711101,
West Bengal
Contact : 9830308707

श्री सौमित्र मंडल सुपुत्र श्री सुपुत्र श्री चित्ररंजन मंडल का जन्म 25 दिसम्बर 1978 को कडमतला, हावड़ा, पश्चिम बंगाल में हुआ। वह पिछले 21 वर्षों से हथकरघा क्षेत्र में डिज़ाइन का काम कर रहे हैं।

उन्हें "व्यक्तिगत डिज़ाइनर" श्रेणी में हथकरघा क्षेत्र में डिज़ाइन विकास के लिये राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Soumitra Mondal S/o Shri Chitranjan Mondal was born on 25th December 1978 in Kadamtala, Howrah, West Bengal. He has been designing in Handloom sector for the last 21 years.

He receives the National Handloom Award for Design Development in Handloom sector under "Individual Designer" category.

श्री सौमित्र मंडल

Shri Soumitra Mondal

श्री सौमित्र मंडल फैशन और टेक्सटाइल डिजाइनिंग में स्नातक हैं। उन्होंने 2002 में अपना स्वयं का डिज़ाइनिंग हाउस खोलकर डिज़ाइनिंग का सफर प्रारंभ किया। उन्होंने पश्चिम बंगाल के विभिन्न हिस्सों में कई बुनकरों और कारीगरों के साथ मिलकर काम किया है। उन्होंने लैक्मे फैशन वीक–2007 में अपना ब्रांड लेबल पेश किया और कई वर्षों तक फैशन वीक में भाग लेते रहे। उन्होंने 2018 में जापान में अपना नया हथकरघा–आधारित ब्रांड – बुनोन प्रस्तुत एवं प्रारंभ किया। इनकी उत्कृष्ट डिजाइनिंग के कारण उनका वार्षिक कारोबार वित्त वर्ष 2020–21 में 5.35 लाख से बढ़कर 2021–22 में 59.27 लाख हो गया। उनके डिजाइनों से 100 से अधिक हथकरघा बुनकर लाभान्वित हुए और उनकी मासिक आय 2020–21 में ₹9000 से बढ़कर 2021–22 में ₹12000/– तक हो गई।

Shri Soumitra Mondal is graduate in Fashion and Textile Designing. He started is designing journey in 2002 with opening a own designing house. He has worked closely with many weavers and artisans in different part of West Bengal. He introduced his brand label in LAKME FASHION WEEK -2007 and worked for several year at Fashion Week. He introduced his new handloom-based brand -BUNON In Japan in 2018. His superior designing has led to increase in his turnover from 5.35 lakhs in 2020-21 to 59.27 lakhs in 2021-22. His designs have benefitted 100+ handloom weavers and their monthly wages have increased from ₹9000 in 2020-21 to ₹12000/- in 2021-22.

श्री श्याम सुंदर मेहेर
सुपुत्र स्वर्गीय बटु चरण मेहेर
गॉव – पटभदी, पो.ओ. – सोनेपुर ,
जिला – सुबर्णपुर – 167017,
ओडिशा
सम्पर्क : 9668814982

Shri Shyam Sundar Meher
S/o Late Batu Charan Meher
At Patabhadi, P.O. -Sonepur,
Dist. Subaranpur - 167017,
Odisha
Contact : 9668814982

श्री श्याम सुंदर मेहेर सुपुत्र स्वर्गीय बटु चरण मेहेर का जन्म 2 जुलाई, 1973 को सोनेपुर, जिला– सुबर्णपुर, ओडिशा में हुआ। वह पिछले 11 वर्षों से ओडिशा इकत डिज़ाइन कर रहे हैं।

उन्हें "व्यक्तिगत डिज़ाइनर" श्रेणी में हथकरघा क्षेत्र में डिज़ाइन विकास के लिये राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता है।

Shri Shyam Sundar Meher S/o Late Batu Charan Meher was born on 2nd July 1973 in Sonepur, Dist. Subaranpur, Odisha. He has been designing Odisha Ikat for the last 11 years.

He receives the National Handloom Award for Design Development in Handloom sector under "Individual Designer" category.

श्री श्याम सुंदर मेहेर
Shri Shyam Sundar Meher

श्री श्याम सुंदर मेहेर 1997 में बी०के० कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड क्राफ्ट्स, भुवनेश्वर से फैशन और ललित कला में स्नातक हुए। उन्होंने 2006 में हथकरघा उत्पादों के लिए डिजाइनिंग कार्य शुरू किया और हाथ से बुनी हुई इकत साड़ी और ड्रेस मटीरियल की डिजाइनिंग में निपुणता प्राप्त की, उनकी विशेषज्ञता हाथ से बुनी हुई इकत उत्पादों की डिजाइनिंग में है। इनकी उत्कृष्ठ डिजाइनिंग की वजह से इनका वार्षिक कारोबार वित्त वर्ष 2018–19 में 18.48 लाख से बढ़कर 2021–22 में 22.1 लाख हो गया । उन्होंने 35 हथकरघा बुनकरों को प्रशिक्षित किया जिससे की उनका प्रति नग बुनाई का पारिश्रमिक वित्त वर्ष 2018–19 में ₹ 3700 से बढ़कर 2021–22 में ₹ 4800/– तक हो गया।

Shri Shyam Sundar Meher graduated in BFA (Utkal) from B. K. college of Arts and Crafts, Bhubaneswar in 1997. He started designing for handloom products in 2006 and became an expert in designing Handwoven IKAT Sarees & Dress Material. His expertise lies in designing of Handwoven IKAT products. His superior designing has led to increase in his turnover from 18.48 lakhs in 2018-19 to 22.1 lakhs in 2021-22. He trained 35 handloom weavers and their wages have increased from ₹3700 per pcs in 2018-19 to ₹4800/- per pcs in 2021-22.

हथकरघा उत्पादों के विपणन हेतु राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार

National Handloom Awards for Marketing of Handloom Products

अंगिका हथकरघा विकास उद्योग
सहकारी समिति लि.
1/88, गोलाघाट, रामनगर,
वाराणसी – 221008
उत्तर प्रदेश
सम्पर्क : 9415257948

Angika Hathkargha Vikas
Udyog Sahkari Samiti Ltd.
1/88, Golaghat, Ramnagar
Varanasi - 221008,
Uttar Pradesh
Contact : 9415257948

अंगिका हथकरघा विकास उद्योग सहकारी समिति लिमिटेड का पंजीकरण 7 मार्च 1994 को हुआ। यह समिति पिछले 28 वर्षों से हथकरघा उत्पादों का बड़े स्तर पर विपणन कर रही है।

इस समिति को "प्राथमिक सहकारी समिति" श्रेणी के तहत हथकरघा उत्पादों के विपणन के लिये राष्ट्रीय हथकरघा पुरस्कार से सम्मानित किया जाता हैं।

Angika Hathkargha Vikas Udyog Sahkari Samiti Ltd. was registered on 7th March 1994. It has been involved in the production and sales of in Handloom Products for the last 28 years.

It receives the National Handloom Award for Marketing of Handloom products under the "Primary Cooperative Society" category.

अंगिका हथकरघा विकास उद्योग सहकारी समिति लि.

Angika Hathkargha Vikas Udyog Sahkari Samiti Ltd.

अंगिका हथकरघा विकास उद्योग सहकारी समिति लिमिटेड को 25 हथकरघा और कुछ बुनकरों/सहायकों के साथ 7 मार्च 1994 को उत्तर प्रदेश सहकारी समिति अधिनियम 1965 के तहत गोलाघाट, रामनगर, वाराणसी में पंजीकृत व प्रारंभ किया गया था। यह समिति बनारसी सिल्क साड़ी का उत्पादन और विपणन कार्य करती रही है। हथकरघा उत्पादों की बिक्री 2020–21 में 207.09 लाख से बढ़ कर 2021–22 में 569.70 लाख हो गई, इसी के साथ 2020–21 मे 45 बुनकरों से बढ़ाकर 2021–22 मे 160 बुनकरों को रोजगार प्रदान किया। समिति वर्तमान मे 400 हथकरघा बुनकरों को रोजगार प्रदान करती है जिनकी मासिक आय 2020–21 में ₹ 8765/– थी जो 44 प्रतिशत की वार्षिक वृद्धि के साथ 2021–22 में ₹ 12618 तक हो गई।

Angika Hathkargha Vikas Udyog Sahkari Samiti Ltd. was registered and started on 7th March 1994 under the Uttar Pradesh Co-Operative Societies Act 1965 at Golaghat, Ramnagar, Varanasi with 25 Handlooms and few weavers/helpers. The society has been involved in production and marketing of Banarasi Silk Sarees. It's sales of handloom products was 207.09 Lakhs in 2020-21 that increased to 569.70 Lakhs in 2021-22 with increase in employment generated from 45 (2020-21) to 160 (2021-22). It provides employment to 400 nos of Handloom weaver whose monthly earnings have increased from ₹8765/- in 2020-21 to ₹12618 in 2021-22 with 44% increase on YOY basis.

O/o DEVELOPMENT COMMISSIONER (HANDLOOMS)
Ministry of Textiles, Govt. of India

www.handlooms.nic.in